Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

कला संस्कृति एवं विरासत का संरक्षण : भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में

रोली गुप्ता[1]
सहायक प्राध्यापक, एस्पायर इंस्टीट्यूट, इंदौर

सारांश

भारतीय कला, संस्कृति एवं परंपराएँ देश की ऐतिहासिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक पहचान का आधार हैं। ये केवल सांस्कृतिक धरोहर ही नहीं, बल्कि समाज के नैतिक मूल्यों, जीवन शैली एवं सामुदायिक एकता को भी सुदृढ़ करती हैं। वर्तमान वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण एवं पाश्चात्य प्रभाव के कारण पारंपरिक कला, लोक संस्कृति तथा सांस्कृतिक मूल्यों में निरंतर परिवर्तन देखने को मिल रहा है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक लोक कलाएँ एवं परंपराएँ विलुप्त होने की स्थिति में पहुँच रही हैं।

यह शोध कला, संस्कृति एवं परंपराओं के संरक्षण के महत्व, चुनौतियों तथा संरक्षण के उपायों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा, जनजागरूकता, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, डिजिटल माध्यमों तथा सरकारी नीतियों के माध्यम से सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण संभव है। साथ ही युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है, ताकि भारतीय संस्कृति की निरंतरता बनी रहे।

शोध का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि कला, संस्कृति एवं परंपराओं का संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व है। यदि सामूहिक प्रयास किए जाएँ, तो भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए आने वाली पीढ़ियों तक प्रभावी रूप से पहुँचाया जा सकता है

मुख्य शब्द (Key Words)

भारतीय ज्ञान परंपरा, कला संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत, भारतीय संस्कृति, लोक कला, सांस्कृतिक धरोहर, परंपरा एवं मूल्य, विरासत संरक्षण, शास्त्रीय कला, सांस्कृतिक पहचान।

प्रस्तावना

भारत में कला की चर्चा आदि काल से ही होती आ रही है। वैसे देखो तो कला, संस्कृति एवं सभ्यता इस देश की जन्मभूमि एवं सहायक रही है। हमारे देश में कला के विभिन्न रूप में विद्यमान है, जैसे कि मूर्तिकला, शिल्पकला, वास्तुकला, नाट्यकला इत्यादि। इसलिए हमारे देश की कला में देश और विदेश में आकर्षण का केंद्र रही है। हमारे देश की विशेषता रही है कि हम समय-समय पर अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को निभाते हुए बदलाव को अपनाते और कला की विभिन्न शैलियों का प्रयोग करते रहे हैं। निरंतर किया। भारत की समृद्ध विरासत को जीवित रखने के लिए संघर्ष एवं आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए समय-समय पर कला पर चर्चा करना अत्यन्त आवश्यक है। हमारा सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्धन का मूल आधार अनेकता में एकता है।

संरक्षण का महत्त्व

सांस्कृतिक पहचान –कला हमारी संस्कृति की पहचान है। कला के माध्यम से हम हमारी संस्कृति से जुड़े होते हैं। यह समाज में हमारी पहचान बनाने में मदद करती है। भारत के प्रत्येक प्रदेश में विभिन्न प्रकार की कलाएँ पाई जाती हैं। ये सभी कलाएँ विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं। जैसे मध्य प्रदेश में गोंड आर्ट, वारली चित्रण के रूप में, गुजरात में अजन्ता-एलोरा की मूर्तियाँ, कांची का स्तूप, उत्तर प्रदेश में वाराणसी में सारनाथ का स्तूप, आगरा का ताजमहल आदि। ये सभी कलाएँ भारतीय कला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। इन्हें बनाने में हजारों वर्षों का समय लगा है। विविधता का संरक्षणभारत में विविध प्रकार की कलाएँ हैं। इन कला के सुंदर, संवेदनशील विरासत के बनाए रखने के लिए इनका संरक्षण बहुत

आवश्यक है। कला संरक्षणकला के माध्यम से हम अपने पूर्वजों के ज्ञान को जान सकते हैं तथा उससे जुड़ी भावनाएँ और संस्कृतियाँ भी समझ सकते हैं। इससे हम अपनी संस्कृति से जुड़ाव बनाए रखते हैं।

लोककला का अर्थ एवं स्वरूप

लोककला का अर्थ उन कलात्मक अभिव्यक्तियों से है जो लोकजीवन से उत्पन्न होती हैं और सामान्य जनता द्वारा विकसित एवं संरक्षित की जाती हैं। यह कला किसी विशेष वर्ग तक सीमित न होकर जनसामान्य के जीवन का हिस्सा होती है। लोककला के प्रमुख स्वरूप निम्नलिखित हैं—

- **लोकचित्रकला**

भारत में विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार की लोकचित्रकलाएँ प्रचलित हैं—

- मधुबनी चित्रकला (बिहार)
- वारली चित्रकला (महाराष्ट्र)
- पिथोरा कला (गुजरात एवं मध्यप्रदेश)
- फड़ चित्रकला (राजस्थान)

- **लोकनृत्य**

लोकनृत्य सामाजिक और धार्मिक उत्सवों का महत्वपूर्ण अंग हैं। जैसे—

- भांगड़ा (पंजाब)
- गरबा (गुजरात)
- घूमर (राजस्थान)
- बिहू (असम)

- **लोकसंगीत-** लोकगीतों में समाज की भावनाएँ, प्रेम, प्रकृति और लोकजीवन का चित्रण होता है। आल्हा, बिरहा, लावणी और भजन इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
- **हस्तशिल्प एवं लोकशिल्प-** मिट्टी के बर्तन, बांस शिल्प, हथकरघा, लकड़ी कला तथा धातु शिल्प भारतीय लोककला की विशेष पहचान हैं।

लोककला परंपराओं का महत्व

- **सांस्कृतिक पहचान का आधार-** लोककलाएँ किसी समाज की पहचान और गौरव का प्रतीक होती हैं।
- **सामाजिक एकता-** लोक उत्सव और लोकनृत्य समाज में एकता और सामूहिकता की भावना को मजबूत करते हैं।
- **ऐतिहासिक एवं पारंपरिक ज्ञान -** लोककलाओं में समाज के इतिहास, परंपराओं और जीवन-मूल्यों का संरक्षण होता है।
- **आर्थिक महत्व-** हस्तशिल्प और लोककलाएँ रोजगार एवं पर्यटन को बढ़ावा देती हैं।

लोककला परंपराओं के समक्ष चुनौतियाँ

- **वैश्वीकरण और पाश्चात्य प्रभाव-** आधुनिक मनोरंजन के साधनों और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से लोककलाओं का महत्व कम हो रहा है।
- **आर्थिक समस्याएँ-** लोक कलाकारों को उचित पारिश्रमिक और बाजार नहीं मिलने से वे अन्य व्यवसाय अपनाने को विवश हो जाते हैं।

GYAN MANTHAN INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

- **नई पीढ़ी की उदासीनता-** युवा पीढ़ी पारंपरिक कलाओं के प्रति कम रुचि दिखा रही है।
- **तकनीकी एवं औद्योगिक प्रतिस्पर्धा-** मशीनों से बने उत्पादों के कारण हस्तशिल्प और पारंपरिक कलाओं की मांग घट रही है।

लोककला संरक्षण के उपाय

- **शिक्षा में लोककलाओं का समावेश-** विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में लोककला आधारित पाठ्यक्रम शामिल किए जाने चाहिए।
- **डिजिटल संरक्षण-** लोकगीतों, चित्रकलाओं और लोकनृत्यों का डिजिटलीकरण कर उन्हें ऑनलाइन माध्यमों से सुरक्षित रखा जा सकता है।
- **सरकारी योजनाएँ-** सरकार को कलाकारों के लिए आर्थिक सहायता, प्रशिक्षण और विपणन सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए।
- **सांस्कृतिक मेले एवं उत्सव -** लोककलाओं को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक मेले, प्रदर्शनियाँ और लोक उत्सव आयोजित किए जाने चाहिए।
- **युवाओं की सहभागिता-** युवाओं को लोककलाओं से जोड़ने के लिए कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।

भारतीय ज्ञान परंपरा और लोककला

भारतीय ज्ञान परंपरा में लोककलाओं को विशेष महत्व दिया गया है। लोककलाएँ केवल कला नहीं, बल्कि लोकज्ञान, नैतिकता, आध्यात्मिकता और सामाजिक मूल्यों की संवाहक हैं। वे भारतीय संस्कृति की निरंतरता और जीवंतता को बनाए रखती है।

निष्कर्ष

लोककला परंपराएँ भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। इनमें समाज की ऐतिहासिक स्मृतियाँ, सांस्कृतिक मूल्य और जीवन की सादगी प्रतिबिंबित होती है। वर्तमान समय में इनका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि लोककलाओं के बिना हमारी सांस्कृतिक पहचान अधूरी हो जाएगी। सरकार, समाज, शैक्षणिक संस्थानों तथा युवा पीढ़ी के संयुक्त प्रयासों से लोककलाओं का संरक्षण संभव है। यदि इन परंपराओं को आधुनिक तकनीक और शिक्षा से जोड़ा जाए, तो वे भविष्य में भी जीवित और प्रासंगिक बनी रहेंगी। संस्कृति के बिना मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती इसलिए इसका संरक्षण ही प्रगति है। यह एक समृद्ध दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो कला के महत्व संरक्षण की आवश्यकता और तरीकों पर प्रकाश डालती है।

संदर्भ सूची

1. उपाध्याय, बलदेव — *भारतीय संस्कृति के आधार*
2. शर्मा, रामविलास — *लोक संस्कृति और साहित्य*
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी — *भारतीय संस्कृति की रूपरेखा*
4. UNESCO रिपोर्ट ऑन इंटैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज
5. नई शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार
6. संगीत नाटक अकादमी प्रकाशन
7. भारतीय लोककला एवं हस्तशिल्प परिषद की रिपोर्टें।